भारत सरकार

आयुष मंत्रालय

**लोक सभा**

**अतारांकित प्रश्न सं. 976**

05 दिसम्बर, 2025 को पूछे जाने वाले प्रश्न का उत्तर

**औषधीय पौधों की खेती**

976. डॉ. आनन्द कुमार गोंड:

क्या आयुष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) सरकार द्वारा देश में औषधीय पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए कौन से कदम उठाए जा रहे हैं;

(ख) क्या औषधीय पौधों की खेती में लगे किसानों को वित्तीय सहायता या उपज की विक्री के लिए सहायता प्रदान की जा रही है और यदि हाँ, तो उत्तर प्रदेश सहित देश भर में इससे लाभान्वित होने वाले किसानों की संख्या कितनी है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है;

(ग) देश में औषधीय पौधों/जड़ी-बूटियों/दुर्लभ पौधों की खेती को बढ़ावा देने के लिए बनाई गई/बनाई जाने वाली योजनाओं का ब्यौरा क्या है;

(घ) क्या सरकार ने औषधीय पौधों और जड़ी-बूटियों की दुर्लभ प्रजातियों की पहचान करने के लिए कोई सर्वेक्षण कराया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उसके निष्कर्ष क्या हैं; और

(ङ) क्या सरकार ने विगत पाँच वर्षों के दौरान औषधीय पौधों के गुणों और प्रभावों पर कोई शोध कराया है और यदि हाँ, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और उसके निष्कर्ष क्या हैं?

**<u>उत्तर</u>**

**आयुष मंत्रालय के राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार)**

**(श्री प्रतापराव जाधव)**

(क): वर्तमान में, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा देने के लिए पूरे देश में "औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन" पर केंद्रीय क्षेत्र की योजना कार्यान्वित कर रहा है जिसमें निम्नलिखित गतिविधियों के लिए सहायता प्रदान की जाती है:

(i) सूचना शिक्षा एवं संचार (आईईसी) गतिविधियाँ जैसे प्रशिक्षण/कार्यशालाएँ/सेमिनार/सम्मेलन आदि।

(ii) औषधीय पादपों की आपूर्ति श्रृंखला में अग्रवर्ती और पश्चवर्ती कड़ी (एकीकृत घटक) जिसके अंतर्गत निम्नलिखित गतिविधियों को सहयोग प्रदान किया जाता है:

- औषधीय पादपों की खेती के लिए गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री तैयार हेतु अवसंरचना।
- किसानों को जागरूक करने हेतु सूचना शिक्षा संचार (आईईसी) गतिविधियाँ।
- औषधीय पादपों की विपणन क्षमता बढ़ाने, उपज का मूल्यवर्धन करने, लाभप्रदता बढ़ाने और क्षति कम करने हेतु फसलोपरांत प्रबंधन और विपणन हेतु अवसंरचना।
- कच्चे माल का गुणवत्ता परीक्षण और प्रमाणन।

(iii) *स्व-स्थाने* संरक्षण/बाह्य-*स्थाने* संरक्षण।

(iv) संयुक्त वन प्रबंधन समितियों (जेएफएमसी)/पंचायतों/वन पंचायतों/जैव विविधता प्रबंधन समितियों (बीएमसी)/स्वयं सहायता समूहों (एसएचजी) के साथ आजीविका संबंध।

(v) अनुसंधान एवं विकास।

(vi) औषधीय पादपों के उत्पादों का संवर्धन, विपणन और व्यापार।

एनएमपीबी आयुष मंत्रालय, भारत सरकार ने वित्त वर्ष 2020-21 से 2024-25 के दौरान देश भर में औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा देने हेतु प्रशिक्षण कार्यक्रम/सेमिनार/कार्यशालाएं आयोजित करने के लिए 1161.96 लाख रुपये की 139 परियोजनाओं को स्वीकृति प्रदान की है। इसके अलावा, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) आयुष मंत्रालय, देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित अपने क्षेत्रीय-सह-सुविधा केंद्र (आरसीएफसी) के माध्यम से देश में औषधीय पादपों की खेती को बढ़ावा देने के लिए किसानों/उत्पादकों को औषधीय पादपों की गुणवत्तापूर्ण रोपण सामग्री (क्यूपीएम) प्रदान करता है। इसके अतिरिक्त, इन आरसीएफसी के माध्यम से समय-समय पर उत्तम कृषि पद्धतियों (जीएपीएस) और उत्तम क्षेत्र संग्रह पद्धतियों (जीएफसीपी) पर प्रशिक्षण और कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं।

(ख): औषधीय पादपों की खेती में लगे किसानों को कोई वित्तीय सहायता या उपज की बिक्री के लिए कोई सहायता प्रदान नहीं की जा रही है। तथापि, औषधीय पादपों के व्यापार के लिए एक मंच प्रदान करने और आसान बाजार पहुंच प्रदान करने के लिए, आयुष मंत्रालय के राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी) ने औषधीय पादपों/जड़ी-बूटियों के प्रचार और विपणन के लिए "ई-चरक" मोबाइल एप्लिकेशन के साथ-साथ वेब पोर्टल शुरू किया किया है। "ई-चरक" देश भर में औषधीय पादपों के क्षेत्र में शामिल विभिन्न हितधारकों मुख्य रूप से किसानों के बीच सूचना आदान-प्रदान को सक्षम करने का मंच है। "ई-चरक" एप्लिकेशन विभिन्न स्थानीय भाषाओं में उपलब्ध है और भारत के 25 हर्बल बाजारों से 100 औषधीय पौधों का पाक्षिक बाजार मूल्य भी प्रदान करता है।

(ग): पूरे देश में औषधीय पौधों सहित बागवानी क्षेत्र के समग्र विकास के लिए एक केंद्र प्रायोजित योजना- कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय के अंतर्गत एकीकृत बागवानी विकास मिशन (एमआईडीएच) कार्यान्वित की जा रही है।

एमआईडीएच योजना के तहत, अल्पावधि औषधीय पादपों अर्थात गैर-बारहमासी प्रकृति और गैर-वृक्ष प्रजातियों के क्षेत्र विस्तार के लिए सहायता प्रदान करने का प्रावधान किया गया है। सहायता की प्रक्रिया सहित लागत मानदंडों का विवरण निम्नलिखित है:

| **क्र. सं.** | **घटक का नाम** | **लागत मानदंड** | **सहायता की प्रक्रिया** |
|---|---|---|---|
| 1 | औषधीय पादप (मुलेठी, शतावरी, कलिहारी, श्वेत मूसली, गुग्गल, मंजिष्ठा, कुटकी, अतीस, जटामांसी, अश्वगंधा, ब्राह्मी, तुलसी, विदारीकंद, पिप्पली, चिरायता, पुष्करमूल आदि) | 1,50,000 रुपये/ हेक्टेयर | 60:40 अनुपात की 2 किस्तों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एकीकृत कीट प्रबंधन आईएनएम/आईपीएम आदि के लिए रोपण सामग्री पर व्यय और सामग्री की लागत को पूरा करने के लिए सामान्य क्षेत्रों में 2 हेक्टेयर तक के क्षेत्र के लिए आनुपातिक आधार पर 40% की दर से सहायता।<br>पूर्वोत्तर एवं हिमालयी राज्यों, टीएसपी (जनजातीय उपयोजना) सहित अनुसूचित क्षेत्रों, वाइब्रेंट विलेज, अंडमान एवं निकोबार तथा लक्षद्वीप द्वीपसमूह के मामले में, 2 हेक्टेयर तक के क्षेत्र के लिए आनुपातिक आधार पर |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | | 50% की दर से सहायता दी जाएगी। |

(घ): जी हां, भारत सरकार ने देश भर में औषधीय पादपों और जड़ी-बूटियों की दुर्लभ, लुप्तप्राय और संकटग्रस्त प्रजातियों की पहचान करने के लिए व्यापक सर्वेक्षण और अध्ययन किए हैं। ये गतिविधियां मुख्य रूप से पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय के अंतर्गत भारतीय वनस्पति सर्वेक्षण (बीएसआई) द्वारा की जाती हैं।

यह सूचित किया गया है कि:-

- भारत में औषधीय पादपों की अनुमानित 8,000 से अधिक प्रजातियां पाई जाती हैं।
- विभिन्न सरकारी एजेंसियों द्वारा सर्वेक्षण में 5,250 से अधिक पादपों प्रजातियों की पहचान की गई है और विभिन्न बीमारियों के लिए 9,567 से अधिक पारंपरिक चिकित्सा दावों को प्रलेखित किया गया है।

देश के विभिन्न पादप-भौगोलिक क्षेत्रों में वन्य पादप संसाधनों के सर्वेक्षण और अन्वेषण के द्वारा, बीएसआई के वैज्ञानिकों ने औषधीय और सगंधीय पादपों की प्रजातियों की भी पहचान की है और ओडिशा, गुजरात, बिहार, थारू और उत्तराखंड की भोकसा जनजाति, पश्चिम बंगाल की लोध जनजातियों के जनजातीय क्षेत्रों में पारंपरिक/औषधीय ज्ञान पर लगभग 2034 एथनोबॉटनिकल सूचना को प्रलेखित किया है।

(ङ): जी हाँ, राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड (एनएमपीबी), आयुष मंत्रालय, 'औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन' पर अपनी केंद्रीय क्षेत्र योजना के अंतर्गत, देश भर में सरकारी के साथ-साथ निजी विश्वविद्यालयों/अनुसंधान संस्थानों/संगठनों को औषधीय पादपों के विभिन्न पहलुओं पर अनुसंधान गतिविधियों के लिए परियोजना आधारित वित्तीय सहायता प्रदान करता है। पिछले पांच वर्षों के दौरान, औषधीय पादपों के गुणों और प्रभावों पर एनएमपीबी द्वारा समर्थित विशिष्ट परियोजनाओं का विवरण **संलग्नक-I** पर दिया गया है।

इसके अतिरिक्त, आईएसीआर-डीएमएपीआर, आनंद मुख्यालय में स्थित औषधीय और सगंधीय पादपों और पान पर अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (एआईसीआरपी-एमएपीबी) के साथ-साथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-औषधीय और सगंधीय पादप अनुसंधान निदेशालय (आईसीएआर-डीएमएपीआर), आनंद, गुजरात औषधीय पादपों के सभी पहलुओं में अनुसंधान और विकास, कृषि तकनीकों के विकास, फसलोपरांत प्रबंधन और भंडारण एवं प्रसंस्करण में सक्रिय रूप से कार्य कर रहे हैं। देश भर में एआईसीआरपी-एमएपीबी के 28 केंद्र (6 स्वैच्छिक केंद्रों सहित) स्थित हैं।

*****

**संलग्नक-I**

**विगत पांच वर्षों के दौरान अनुसंधान और विकास गतिविधियों के लिए देश भर के विभिन्न संगठनों को औषधीय पादपों के संरक्षण, विकास और सतत प्रबंधन के लिए केंद्रीय क्षेत्र योजना के तहत समर्थित परियोजनाओं का विवरण।**

| क्र. सं. | वर्ष | परियोजना शीर्षक और संगठन विवरण | स्वीकृत राशि (लाख रु. में) |
|---|---|---|---|
| 1 | 2020-21 | परियोजना शीर्षक - बायोएक्टिविटी गाइडेड फ्रैक्शनल एंड आइसोलेशन ऑफ बायोएक्टिव कंपाउंड्स फ्रोम सेलेक्टेड मेडिसिनल प्लांट्स विथ एंटीकैंसर पोटेन्सियल अगेन्स्ट ट्रिपल नेगेटिव ब्रेस्ट कैंसर ।<br>संगठन- कॉलेज ऑफ वेटरनरी एंड एनिमल साइंस, मन्नुथी पिन 680651। | 21.382 |
| 2 | 2021-22 | परियोजना शीर्षक- इन विवो और इन विट्रो स्टडी ऑन सिनर्जिस्टिक इफैक्ट ऑफ मेडिसिनल प्लांट्स इन ब्रेस्ट कैंसर ऑफ माइस।<br>संगठन- केंद्रीय विश्वविद्यालय हिमाचल प्रदेश, शाहपुर कैंपस, कांगड़ा, हिमाचल प्रदेश पिन: 176206 | 40.10229 |
| 3 | 2021-22 | परियोजना शीर्षक- आइसोलेशन एंड इवैल्यूएशन ऑफ बायोएक्टिव कॉम्पोनेंट्स ऑफ यंग रूट्स एंड लीफ एक्स्ट्रक्ट ऑफ बिल्व फॉर आईएल-2 इम्यूनोथेरेपी : इन विट्रो और इन विवो स्टडी ।<br>संगठन- स्कूल ऑफ लाइफ साइंसेज, गाचीबोवली, हैदराबाद, तेलंगाना-500046 | 38.277419 |
| 4 | 2022-23 | परियोजना शीर्षक- आइसोलेशन, कैरक्टराइजेशन ऑफ हर्बल प्लांट कोंस्टीचुएंट्स एंड देयर इफैक्ट ऑन क्यूरिंग ऑस्टियोपोरोसिस युजिंग ऑस्टियोब्लास्टिक सेल लाइंस<br>संगठन 1 - शारदा विश्वविद्यालय पता: प्लॉट नंबर 32, 34, नॉलेज पार्क III, ग्रेटर नोएडा, उत्तर प्रदेश पिन: 201310<br>संगठन 2- एनआईसीपीआर आईसीएमआर स्वास्थ्य अनुसंधान विभाग, स्वास्थ्य और परिवार कल्याण मंत्रालय, भारत सरकार, I-7, सेक्टर -39, नोएडा, उत्तर प्रदेश पिन: 201301 | 20.0133 |
| 5 | 2022-23 | परियोजना शीर्षक- डिसाइफरिंग द रेस्पोंस ऑफ फिकस फ्रूट पॉलीसैकराइड्स ऑन मेजर हिस्टोकंपैटिबिलिटी कॉम्प्लेक्स (एमएचसी) इन इन्फ्लेमेटरी बाउल डिजीज (आईबीडी)।<br>संगठन- भरथियार यूनिवर्सिटी, कोयंबटूर, तमिलनाडु। | 38.05252 |
| 6 | 2022-23 | परियोजना शीर्षक- बायोएसे गाइडेड फ्रैक्शनेशन ऑफ अकेशिया कटेचु एंड रोडियोला इम्ब्रिकेटा फॉर द इन्हिबिशन ऑफ पीईपीसीके जीन एक्सप्रेशन एंड ग्लूकोनेओगेनएसिस इन | 22.2 |

| | | | |
|---|---|---|---|
| | | एच4आईआईई हेपेटोमा सेल लाइन।<br>संगठन- राष्ट्रीय फारेंसिक विज्ञान विश्वविद्यालय (राष्ट्रीय महत्व का संस्थान, गृह मंत्रालय) सेक्टर 3, रोहिणी नई दिल्ली-110085 | |
| 7 | 2023-24 | परियोजना शीर्षक- साइटोटॉक्सिक इवैल्यूएशन ऑफ द नॉन-पोलर कंपाउंड ऑफ *वेलेरियाना वॉलिची* अगेन्स्ट एमडीआर *एसिनेटोबैक्टर बाउमानी* ।<br>संगठन- एमिटी यूनिवर्सिटी, सेक्टर - 125, नोएडा, गौतम बुद्ध नगर, यूपी - 201301 | 18.338 |